अमूल्य–सांस्कृतिक विरासत–कुम्भ

पंकज गर्ग
रूड़की

भारतीय संस्कृति का अद्भुत पर्व 'कुम्भ' जल में डुबकी भर लगाना ही नहीं हैं, एक विशेष अवधि में एक विशेष मुहूर्त पर लाखों–करोड़ों लोग एकत्रित होने का एक गूढ़ प्रयोजन है, किसी विशिष्ट स्थान पर यह एकत्रीकरण एक विराट चेतना का निमार्ण करता है और इस विराट सामूहिक चेतना से, सम्मलित ऊर्जा में परमात्मा का अवतरण सम्भव है–

यही है कुम्भ का विज्ञान

तीर्थ जो एक सामूहिक प्रयोग है , तो एक वर्ष में, दशक में या किसी विशेष वर्ष में विशेष दिन, करोड़ों मानवों के एक तीर्थ स्थान पर, एक ही आंकाक्षा, एक विशेष घड़ी में, एक विशेष तारे के साथ, एक विशेष नक्षत्र में, एक ही स्थान पर, एक ही प्रार्थना, एक ही ध्वनि, एक ही धुन के साथ एकत्रित हो जायेंगे। अगर कुंभ में देखें तो व्यक्ति दिखाई नहीं पड़ता, निपट भीड़ कोई चेहरा नहीं, चेहरा कहॉ बचेगा, इतनी भीड में? कौन–कौन है? अब कोई अर्थ नहीं रह गया। कौन अमीर, कौन गरीब, कोई मतलब नहीं रह गया , पूरा मानव सैलाब मुख विहीन हो गया।

कुम्भ का उद्भव

सागर मंथन हुआ अंततः धन्वंत्री अमृत कलश को लेकर अवतरित हुये, सागर मंथन से पूर्व ही नारायण ने देवताओं को यह विश्वास दिलाया था कि वह अमृत को असुरों के हाथ नहीं लगने देंगे, लेकिन ऐसा तभी संभव होगा, जब उन्हें विश्वास हो कि देवता भी अपने अधिकार की पूर्ण रक्षा के लिए प्रयत्न करेंगे।

देवताओं को स्वयं को सिद्ध करना था इन्होंने निर्णय लिया कि इन्द्र पुत्र जयंत अमृत कलश को छीन कर भाग जाये, दौड़ने में जयत का मुकाबला सिर्फ पवन देव ही कर सकते थे, देवताओं के इशारे पर इन्द्र पुत्र जयंत समुद्र मंथन से निकले अमृत कलश को लेकर उड़ गये, पर दैत्यों ने जयत को पकड़ लिया अमृत कलश के लिये देवताओं और दैत्यों में 12 दिन तक युद्व होता रहा, इस छीना–झपटी में अमृत कलश, छलका और प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन व नासिक में कुछ बूदें गिरी। प्रयाग में गंगा–यमुना–सरस्वती के त्रिवेणी, सगंम में, हरिद्वार में गंगा तट पर, उज्जैन में शिप्रा व नासिक में गोदावरी में। इस छीना–झपटी के बीच चन्द्रमा ने घट से अमृत बाहर गिरने से, सूर्य ने घट को फूटने से, गुरू बृहस्पति ने दैत्यों के अपहरण से एवं शनि देव ने देवेन्द्र के भय से बचाया। अंत में श्री हरि ने मोहिनी रूप धर कर अमृत वितरण का दायित्व लिया।

देवों व असुरों ने 12 दिन तक युद्ध किया था उनके 12 दिन, मनुष्य के भूलोक के 12 वर्ष के तुल्य होते हैं इसलिये कहा जाता है कि कुम्भ भी 12 होते हैं उसमें चार पृथ्वी लोक पर व शेष 8 देव लोक में होते हैं।

समुद्र मंथन की कथा के अनुसार, कुम्भ पर्व का सीधा सम्बन्ध तारों से है, अमृत कलश को स्वर्ग लोक तक ले जाने में जयन्त को 12 दिन का समय लगा। देव लोक में एक दिन भूलोक में एक वर्ष के बराबर होता है, इसलिये तारों के क्रम के अनुसार कुम्भ मेले का आयोजन 12वें वर्ष में विभिन्न तीर्थ स्थानों पर किया जाता है।

कुम्भ का आयोजन

पौराणिक ग्रन्थों में भी कुम्भ व अर्धकुम्भ के आयोजन को लेकर ज्योतिषीय विश्लेषण मिलता है। कुम्भ पर्व प्रत्येक तीन वर्ष के अन्तराल पर हरिद्वार से आरम्भ होता है, हरिद्वार के पश्चात प्रयाग, नासिक फिर उज्जैन में मनाया जाता है। प्रयाग और हरिद्वार में मनाये जाने वाले कुम्भ वर्ष में एवं प्रयाग और नासिक में मनाये जाने वाले कुम्भ पर्व के बीच 3 वर्ष का अन्तर होता है।

अमृत की बूंदें छलकने के समय जिन राशियों में सूर्य, चन्द्रमा, बृहस्पति की स्थिति के विशिष्ट योग के अवसर रहते हैं, वहॉ कुम्भ पर्व का इन राशियों में ग्रहों के संयोग पर आयोजन होता है। इस अमृत कलश की रक्षा में सूर्य, गुरू और चन्द्रमा के विशेष प्रयत्न रहे थे, इसी कारण इन्हीं ग्रहों की उन विभिन्न स्थितियों में कुम्भ पर्व मनाने की परम्परा है।

तुलसी दास जी कहते हैं 'वेद समुद्र है, ज्ञान भद्राचल और सन्त देवता है, जो उस समुद्र को मथ कर कथा रूपी अमृत निकालते हैं, उस अमृत में शक्ति और सतयुगी मधुरता बसती है, जिस समय में चन्द्र, सूर्य व बृहस्पति आदि ने कलश की रक्षा की थी उस समय ग्रहों की जो स्थिति थी उन राशियों पर रक्षा करने वाले ग्रह जब आते हैं तो कुम्भ का योग बनता है।

आयोजन

कुम्भ मेले का आयोजन वैसे तो हजारों सालों से हो रहा है, लेकिन प्रथम लिखित दस्तावेज में प्रमाण महान बौद्ध तीर्थ यात्री हवेंनसांग के लेख से मिलता है जिसमें 6वीं शताब्दी में सम्राट हर्षवर्धन के शासन में होने वाले कुम्भ का प्रसंगवश वर्णन किया गया है।

हरिद्वार

गगां के तट पर हरिद्वार में कुम्भ आयोजित होता है। हरिद्वार का सम्बन्ध मेष राशि से है, कुम्भ राशि में बृहस्पति का प्रवेश होने एवं मेष राशि में सूर्य का प्रवेश होने पर कुम्भ पर्व हरिद्वार में आयोजित किया जाता है। आने वाले समय में वर्ष 2022 में पांच जनवरी से एक मार्च तक कुम्भ का आयोजन गंगा तट पर हरिद्वार में होगा।

प्रयाग

त्रिवेणी घाट इलाहाबाद में, गंगा–यमुना–सरस्वती के संगम पर कुम्भ मेला आयोजित किया जाता है, वर्ष 2019 में कुम्भ का सफल आयोजन हुआ। ज्योतिष शास्त्रियों के अनुसार, जब बृहस्पति, कुम्भ राशि में और सूर्य मेष राशि में प्रवेश करता है तो प्रयाग में कुम्भ आयोजित होता है। आने वाले समय में वर्ष 2025 में 13 जनवरी से 12 फरवरी तक प्रयाग में अर्ध कुम्भ होगा।

नासिक

गोदावरी नदी के पावन तट पर नासिक में कुम्भ का आयोजन होता है। 12 वर्षों में एक बार सिंह राशि के बृहस्पति में प्रवेश होने पर कुम्भ पर्व गोदावरी के तट पर आयोजित होता है। अमावस्या के दिन बृहस्पति, सूर्य एवं चन्द्र के कर्क राशि में प्रवेश होने पर भी कुम्भ पर्व गोदावरी तट पर आयोजित होता है। आने वाले समय में वर्ष 2027 के दौरान 13 जनवरी 12 फरवरी तक नासिक में आयोजन होगा।

उज्जैन

क्षिप्रा नदी के तट पर उज्जैन में कुम्भ होता है। उज्जैन में कुम्भ, सिंह राशि में बृहस्पति व मेष राशि में सूर्य के प्रवेश होने पर कुम्भ का आयोजन होता है। इसके अतिरिक्त कार्तिक अमावस्या के दिन सूर्य और चन्द के साथ होने पर एवं बृहस्पति के तुला में प्रवेश होने पर मोक्षदायक कुम्भ

उज्जैन में आयोजित होता है। आने वाले समय में वर्ष 2028 में 8 अप्रैल से 8 मई के दौरान कुम्भ का आयोजन उज्जैन में होगा।

अखाड़ा

अखाड़ा सामाजिक व्यवस्था की एकता और संस्कृति तथा नैतिकता का प्रतीक है। समाज में आध्यात्मिक महत्व व मूल्यों की स्थापना करना ही अखाड़ों का मुख्य उद्देश्य है।

अखाड़ों की सबसे बड़ी जिम्मेदारी सामाजिक जीवन के नैतिक मूल्यों की स्थापना करना है इसलिए धर्म गुरूओं के चयन के समय यह ध्यान रखा जाता था कि उनका जीवन सदाचारी, संयमी, परोपकारी कर्मठता, दूरदर्शी तथा धर्ममय हो।

वर्तमान में अखाड़ों का मुख्य वर्गीकरण उनके ईष्टदेव के आधार पर निम्न तीन श्रेणियों में किया जा सकता है।

- **शैव अखाड़ा–** इस श्रेणी में ईष्ट भगवान शिव है। ये शिव के विभिन्न स्वरूप की अराधना अपनी–अपनी मान्यताओं के आधार पर करते हैं।
- **वैष्णव अखाड़ा–**इस श्रेणी के ईष्ट भगवान विष्णु हैं ये विष्णु के विभिन्न स्वरूपों की अराधना अपनी–अपनी मान्यताओं के आधार पर करते हैं।
- **उदासीन अखाडा–** सिक्ख सम्प्रदाय के आदि गुरू श्री नानक देव के पुत्र श्री चन्द्रदेव को उदासीन मत का प्रवर्तक माना जाता है। इस पन्थ के अनुयाई मुख्यतः ''प्रणव'' व 'ॐ' की उपासना करते हैं।

आखाडों की समृद्ध परम्परा

आदि शंकराचार्य ने धर्म की रक्षा के लिये अखाड़ों की स्थापना की थीं। उन्होंने सबसे पहले आह्वान अखाड़ां की स्थापना की थी, इस अखाड़े का विस्तार होते–होते शैव सम्प्रदाय के सात अखाड़े बने। भगवान शिव की पूजा करने वाले शैव अखाड़े कहलाये। सनातन धर्म की रक्षा करने हेतु शंकराचार्य ने समस्त भारत का भ्रमण किया विभिन्न मठों जो अलग–अलग मतों को मानने वाले थे को अपनी विचार धारा से प्रभावित करके अपने साथ जोड़ा। इन्हें अखाड़ों का रूप इसलिये देना पड़ा क्योंकि तब तक विधर्मी बहुत ज्यादा सक्रिय थे। उस समय कोई अक्रात्ता भारत पर हमला करने की हिम्मत नहीं जुटा सकता था। लेकिन राजाओं की आपसी फूट से शक्ति का संतुलन गड़बड़ा गया। तब शंकराचार्य जी ने आह्वान अखाड़ा खड़ा किया।

अखाड़ा का अर्थ है–जहां एक हाथ में दीपक व दूसरे हाथ में तलवार। ज्ञान के प्रकाश में तलवार का प्रयोग करते धर्म की रक्षा का कार्य प्रारम्भ हुआ।
प्रशासन द्वारा कुल तेरह अखाड़ों को मान्यता दी गई है।

जूना अखाड़ा
श्री शम्भू पंचायती अटल अखाड़ा
महानिर्वाणी अखाड़ा
पंच अग्नि अखाड़ा
आह्वान अखाड़ा
अन्नद अखाड़ा

महत्व

- कुम्भ मेला आध्यात्मिक तथा धर्मिक महत्व रखने के साथ–साथ सामाजिक तथा सांस्कृतिक महत्व का भी परिचायक है। यह हमारे राष्ट्रीयता का प्रतीक है। जिसमें सभी पन्थ और समुदाय के लोग बिना किसी भेदभाव के भाग लेकर पावन स्नान करते हैं।
- यह एक ऐसा आयोजन है, न निमन्त्रण न सूचना न मनुहार न न्यौता, पर प्रत्येक छः साल व 12 साल के अन्तराल पर धर्म और अध्यात्म में आस्था रखने वाले भारतीय बरबस कुम्भ की ओर आकर्षित होते हैं।
- कुम्भ सामाजिक समरसता का प्रतीक होने के साथ–साथ स्त्री पुरूष समानता स्थापित कर मानव को मोह–माया से दूर रखता है।
- असंख्य श्रद्धालुओं और असंख्य धाराओं का यह महा मिलन और जन समागम तीर्थ भूमियों पर सदियों से होता रहा है, कुम्भ में एक पूरा का पूरा मानव महासागर पवित्र नदियों की ओर जाता रहा है, क्या राजा, क्या रंक, क्या धनी क्या निर्धन क्या गांव का क्या शहर से, गठरी–मोठरी बांधे एक दूसरे का पल्ला पकड़े, गंगा गीत गाते स्त्री–पुरूष का हुजूम, सभी अपनी धुन में मगन होते आते हैं व पुण्य के भागी बनते हैं।

फल

कुम्भ की शुरूआत सन्तों के स्नान से होती है, पुराणों में प्रसंग आता है, जब भगीरथ ने गंगा को स्वर्ग से पृथ्वी पर अवतरण की प्रार्थाना की तो गंगा ने पूछा कि लोग उनके जल से स्नान करके पापों से मुक्ति पा लेगें लेकिन उस पाप को वह कैसे धोयगी?, भगीरथ बोले आत्मतीर्थ से आये ब्रह्मज्ञानी जब आपके जल से स्नान करेंगे तब उनके स्पर्श से अपने आप पाप नष्ट हो जायेंगे, आप पवित्र हो जायेंगी।

तन–मन व मति के दोषों की निवृत्ति के लिये तीर्थ और कुम्भ पर्व हैं।

अमूर्त सांस्कृतिक विरासत–यूनेस्को

यूनेस्को के आधीन अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की सुरक्षा करने वाली अन्तः सरकारी समिति ने 4–9 दिसम्बर 2017 के दौरान दक्षिण कोरिया के जेजू में आयोजित अपने 12वें सत्र में मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की प्रतिनिध सूची में कुम्भ मेला को सम्मिलित किया।

समिति ने कहा कुम्भ मेला पृथ्वी पर तीर्थयात्री का सबसे बड़ा शान्तिपूर्ण समागम है, प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन व नासिक में आयोजित यह उत्सव भारत में पूजा से सम्बन्धित अनुष्ठानों के एक समन्वित समूह का प्रतिनिधित्व करता है।

- यह एक सामाजिक अनुष्ठान और उल्लासमय समारोह है जो समुदाय के अपने इतिहास और सांस्कृति की धारणा से जुड़ा है।
- यह मेला दर्शाता है कि समकालीन दुनिया के लिये सहिष्णुता और सम्मिलन विशेष रूप से महत्वपूर्ण है।
- यह तत्व मौजूदा अर्न्तराष्ट्रीय मानव अधिकार उपकरणों के साथ संगत है क्योंकि इसमें समाज के सभी वर्गों के लोग बिना किसी भेदभाव के भाग लेते हैं।
- इसी आधार पर कुम्भ मेले को अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के रूप में मान्यता दी गयी जो भारत की सभ्यता और संस्कृति के महत्व को दशार्ती है। वर्ष 2003 के युनेस्को महासभा ने एक अन्तर्राष्ट्रीय सन्धि के रूप में अमूर्त विरासत की सुरक्षा के समझौते को अपनाया और स्वीकार किया।
- अमूर्त सांस्कृतिक विरासत में "मात्र मूर्त स्थान, स्मारक और वस्तुयें ही नहीं, बल्कि परम्पराएं और जीवन अभिव्यक्तियां भी सम्मिलित हैं।

अमूर्त सांस्कृतिक विरासत का अर्थ–प्रथाओं, प्रतिनिधित्वों, अभिव्यक्तियों, ज्ञान और कौशल के साथ–साथ उनसे जुड़े उपकरणों, वस्तुओं कलाकृतियों और सांस्कृतिक स्थानों से है, जिन्हें विभिन्न समुदाय, समूह और व्यक्ति अपनी सांस्कृतिक विरासत का ही एक भाग मानते हैं।

यह अमूर्त सांस्कृतिक विरासत समुदायों और समूहों द्वारा अपने पर्यावरण, अपनी प्रकृति और अपने इतिहास से सम्पर्क की प्रतिक्रिया में लगातार निर्मित की जाती है यह उन्हें पहचान और निरन्तरता की भावना प्रदान करती है।

कुम्भ पर्व हमारी राष्ट्रीयता का प्रतीक है, जो सभी पन्थों और सम्प्रदायों को एकत्व के भाव में पिरोता है। मार्क टुली के शब्दों में विश्व के सबसे विशाल जनसंगम के रूप में कुम्भ एक चमत्कार है यह भारत की अदृश्य आध्यात्मिक शक्ति का दृश्य प्रतीक है।

कुम्भ मेला वास्तव में विशाल भारत की विविधता में एकता का संगम है। यह भारत के सांस्कृतिक प्रवाह के महान वाहक के रूप में उभरकर आता है। इस मेले में ज्योतिर्विज्ञान अध्यात्म, इतिहास और जन जीवन का अपूर्व संगम दिखाई देता है।

इतने मानवों की अपार श्रद्धा और विश्वास पूर्ति सन्तुष्टि का अनुभव कर ''महात्मा गांधी के ये शब्द याद आते हैं–

''मैं कुम्भ में धर्म की भावना से नहीं गया था, किन्तु जहां जो 24 लाख लोग आये हैं वे सभी पाखण्डी नहीं हो सकते, व्यक्ति जब अपनी पहचान छोड़ कर, अपना अहम त्याग कर समष्टि में, समिष्ट की धारा में समाहित होकर प्रवाहमान होने लगता है, तभी कुम्भ अपनी पूर्ण और चरम सार्थकता को प्राप्त होता है।

हिंदी वह धागा है, जो विभिन्न मातृभाषा रूपी फूलों को पिरोकर भारत माता के लिए सुंदर हार का सृजन करेगा।

डॉ. जाकिर हुसैन